तुर्य बजा

वां०मू०
५-२५

गति

शुभ संकल्प,

प्रेम,

कर्म,

ब्रह्मचर्य पालन,

फकीर चन्दजी महाराज

वता मन्दिर होशियारपुर (पंजाब)

'मनुष्य बनो' के नियम

१— शारीरिक, मानसिक आध्यात्मिकता के नियमों का वास्तविक दृष्टिकोण से प्रचार करना और प्रेम, सभ्यता, आदर, शिष्टाचार, सदाचार सहनशीलता और संयम की शिक्षा देना इसका मुख्य उद्देश्य है। मनुष्य बनना और बनाना।

२— सन्त महात्माओं और ऋषियों की वाणी को सरल, सुबोध और साधारण भाषा में प्रचार करना।

३—सामाजिक उन्नति कारक तथा देशहित कारक लेखों को भी स्थान दिया जायगा।

४—किसी धर्म, पंथ या सम्प्रदाय के खण्डन सम्बन्धी लेख नहीं छापे जायेंगे।

५—यह पत्र प्रत्येक मास की १५ तारीख को प्रकाशित हुआ करेगा।

६—लेखों के घटाने बढ़ाने और छापने न छापने का अधिकार सम्पादक होगा। लेख सम्पादक के नाम भेजे जाय।

७—ग्राहकों को पत्र लिखते समय ग्राहक नम्बर व पता साफ साफ अवश्य लिखना चाहिये। उत्तर के लिये जवाबी कार्ड आना चाहिये। वी०पी० पी० से पत्रिका नहीं भेजी जायगी। इसका वार्षिक मूल्य ५-२५ है।

८—यदि किसी मास का पत्र ठीक समय पर न पहुँचे तो पहले अपने यहां डाकखाने से पूछताछ करके वहां से जो उत्तर मिले वह अगला अंक निकलने से एक सप्ताह पूर्व तक कार्यालय में पहुँचने पर ही दूसरी प्रति बिना मूल्य भेजी जा सकेगी।

९—प्रबन्ध सम्बन्धी पत्र, ग्राहक होने की सूचना, मनीआर्डर आदि मैनेजर के नाम से भेजने चाहिये। मनीआर्डर कूपन पर अपना पता साफसाफ लिखना चाहिये। और पते की तबदीली भी।

प्रकाशक

R.S.

ओ३म् पूर्णमदः पूर्णमिदं: पूर्णात्पूर्ण मदुच्यते ।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्ण मेवावशिष्यते ॥

❀ मनुष्य बनो ❀

वर्ष २७	फाल्गुन सं० २०३३ दि० फरवरी १९७७	संख्या ५

॥ चेतावनी ॥

जो मालिक का चहे दीदार, जा तू बैठ गुरू दरबार ।
मालिक का बालक गुरु पूर, मालिक का हरदम मंजूर ।
बन्दगि भजन करे सौ बरसा, गुरु का संग दो घड़िया बढ़ का ।
जब वह घट का भेद सुनावे, मन और सुरत गगन को धावें ।
गुरु बिन घट में राह न चलना, डर और विघ्न अनेकन मिलना ।
गुरु रक्षा जाके सँग नाहीं, इनको काल कर्म भरमाहीं ।
गुरु पूरे को समरथ जान, कर्म बान उलटावें आन ।
भान रूप मालिक सुन भाई, नर देही में रहा छिपाई ।
गुरु की गत परखो अन्तर में, बिन परखे मत मानो मन में ।
परम पुरुष सम गुरु को जान, बिन जिह्वा कहें बचन सुजान ।
साध का निरख आँख और माथा, सत का नूर रहे जिस साथा ।
अस चिन्ह देख करें पहिचान, गुरुपद का जिन हृदय ज्ञान ।

०—०

दातादयाल का दिल्ली में ऐक दिन

सम्पादकीय--

बसन्त पचमी के अवसर पर हैदराबाद तथा दक्षिण भारत में सत्संग को जाते समय दातादयाल दि॰ २१-१-७७ को दिल्ली में ठहरे थे। प्रातः २१-१-७७ को दिल्ली स्टेशन से सतसगी उनको १६/६८४ लोदी रोड श्री द्वारिका प्रसाद जी के निवास स्थान पर ले आये यद्यपि प्रोग्राम के मुताविक श्री नन्दलाल जी के स्थान पर महारज ठहरते हैं मगर श्री नन्दलाल जी के अस्वस्थ होने के कारण महाराज को लोदी रोड आना पड़ा। तमाम सत्संगियों को महराज के दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। महाराज यद्यपि ६१ साल पार कर चुके हैं मगर उनका आत्मिक बल अभी भी स्वस्थ है आत्मा पवित्र है तथा वाणी में ओज है। दूर २ से सतसगी सर्दी का प्रकोप होते हुये भी सारे दिन महाराज को घेरे रहे। दातादयाल की भी यही अवस्था थी कि वह अपने स्थूल शरीर को आराम देना चाहते थे मगर वह कर कहाँ पाते क्योंकि वहां तो ज्योती से ज्योती प्रकाशित हो रही थी। अमृत बरस रहा था। दाता का एक २ शब्द में जिज्ञासुओं की आँखों से आँसू बहा रहा था। कैसा यह मिलन था। लोग कहते हैं हमको शान्ति नहीं मिलती, उनका ध्यान नहीं बनता, हमको यह दुख है हमको वह दुख है, किसी को रोजगार चाहिये, किसी को मुकद्दमा लगा, किसी की तरक्की रुकी पड़ी है तो किसी को बच्चे की जिज्ञासा है। जो जिस भाव से आया व आशीर्वाद लेकर गया। दातादयाल कहते हैं कि मै किसी को कुछ नहीं देता यह सच भी है उनके स्थूल शरीर से किसी को कुछ नहीं मिलता। जो किसी को मिलता है उसके अपने विश्वास व भावना से ही मिलता है श्रद्धा से ही मिलता है अगर कोई तमाशा समझ करके उनके पास आता है तो केवल खाली हाथ ही लौटकर चला जाता है। महाराज ने सतसंगियों को आग्रह करते हुये बताया कि मनुष्य बच्चे सिर्फ अपने भोगविलास के लिये ही पैदा करता है तो वह जीवन में सुख कहाँ से पायेगा और बच्चे भी कहाँ योग्य पैदा होंगे। बिना ब्रह्मचर्य के मनुष्य को जीवन में सुख शान्ति मिल ही नहीं सकती। संतान थोड़ी हो और योग्य हो यही मनुष्य के जीवन समृद्धी का राज है। हमारा मन ही हमारी असंतुलित अवस्था का कारण हैं मन को साधने के लिये पूर्ण मनुष्य का सतसंग उसके दर्शन उसका ध्यान तथा सुमिरन ही जीवन को सतुलित बना सकता है कौन वह जिज्ञासु हैं जो कीमत देकर इस सौदे को खरीदना चाहते हैं। बिना मूल्य क्या कोई चीज किसी को कभी मिली है।

सम्पादक

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

मानवता

हरेक मनुष्य चाहे किसी भी देश का रहने वाला और चाहे किसी भी धार्मिक, राजनैतिक या सामाजिक विचार वाला हो, दुनिया में रहकर अपना जीवन सुख और शान्ति से विताने का स्वभाविक इच्छुक होता है। और जीवन में जितने भी वह कार्य करता है इसी उद्देश को सामने रखकर करता है कि वह सुख (चैन) से व शान्ति से जीवन व्यतीत करे हम जो कुछ भी काम करते हैं उनको तीन दर्जों यानी वर्गों में बाँटा जा सकता है।

(१) मनुष्यता पूर्वक :—हमारे वे काम जो इस नियत उद्देश को सामने रखकर किये जाते हैं कि इनको करने से हमें सुख मिले साथ ही संसार के दूसरे मनुष्यों के सुख व शान्ती को ठेस न पहुंचे। मनुष्यता पूर्वक काम कहे जा सकते हैं और इस उद्देस से काम करने वाले को मनुष्य कहा जा सकता है।

(२) मनुष्यता हीन :—हमारे वे काम जो इस नियत से किये जाते हैं कि इनके करने से हमें सुख व शान्ती मिले। चाहे हमारे इन कामों से दूसरे लोगों के सुख व शान्ती को ठेस ही क्यों न पहुंचे मनुष्यता हीन काम कहे जा सकते हैं और इनको करने वाले को क्रूर मनुष्य या दुर्जन कहा जा सकता है। और इस क्रूरता की ज्यों ज्यों मात्रा बढ़ती जाती है त्यों त्यों उस करने वाले को हेवान, शैतान की पदवी दी जाती है।

(३) सज्जनता पूर्ण :—हमारे वे काम जो इस नीयत से किये जाते हैं कि उनके करने से संसार के लोगों को सुख व शान्ती पहुंचे चाहे हमें सुख शान्ती मिले या न मिले सज्जनता पूर्ण कार्य कहे जा सकते हैं। और सज्जनता की मात्रा ज्यों ज्यों बढ़ती जाती है ऐसे काम करने वालों को सज्जन, महात्मा व सत पुरुष की पदवी दी जाती है।

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

•आज के संसार में हर देश हर समाज व हर विचार के लोगों में बेचैनी व अशान्ती छाई हुई है जिससे तंग आकर लोगों में यह इच्छा बढ़ती जा रही है कि सुख शान्ती से जिन्दगी बिताने के लिए कोई ऐसा सिद्धान्त निकाला जाय सो सर्व मान्य हो तथा उसके अनुसार कार्य कर सभी लोग सुख शान्ती से जीवन बिता सकें।

हर इन्सान दुनिया में पैदा होता है कुछ न कुछ अधिकार (rights) लेकर कुछ न कुछ कर्तव्य (duties) लेकर आता है और जब और जहां मनुष्य दूसरों के अधिकारों को दबाने का प्रयत्न करता है या अपने कर्तव्यों को निभाने में लापरवाही करता है बस वही घृणा, झगड़े दुख व अशान्ती का दौर आने लगता है।

जिन्दा रहो (To Live) हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है तो जीने दो (To let live) हमारा जन्म सिद्ध अधिकार भी है।

अगर हम सुख शान्तीं से जिन्दा रहना चाहते हैं तो हमें कोई ऐसा कार्य नहीं करना चाहिये कि दूसरे के सुख शान्ती में बाधक हो या उनको ठेस पहुंचे।

दूसरे मानों में हमें दूसरों के साथ ऐसा व्यवहार नहीं करना चाहिये जैसा कि हम चाहते हैं कि दूसरे हमारे साथ न करें जिसे थोड़े शब्दों में जिन्दा रहो व जिन्दा रहने दो (live & let live) का सिद्धान्त भी कहा जा सकता है।

इन्सानियत क्या चीज सन्तों ने बताया सुन अजीज,
अपना सा जिय सबका जाने बस वही इन्सान है।

इस सिद्धान्त को जितना २ अधिक अपनाते जायेंगे उतना २ ही अधिक सुख शान्ती अपने व दूसरों के लिये लाते जायेंगे।

यही गुरु मन्त्र है दुनिया में सुख शान्ती लाने का और इसी को मानवता कहा जा सकता है। गोपीलाल कृषक

प्रवचन

हजूर परमदयालजी महाराज मानवता मन्दिर होशियारपुर

दिनांक १४ अप्रैल १९७६

गतांक से आगे

जो आदमी राम या कृष्ण या बाबे फकीर या किसी और गुरू को पूजते हैं वह सब अपने मन की पूजा करते हैं। इसलिये सन्त कहते हैं कि प्रकाश और शब्द में जाओ। जब तक प्रकाश और शब्द को इष्ट नहीं बनाओगे तुम आगे नहीं जा सकते। गरुड़ पुराण भी यही कहता है कि अगर तुम आवागमन से बचना चाहते हो तो अजपा जाप से और गुरू स्वरूप के ध्यान से प्रकाश और शब्द में जाओ। तब पार जा सकोगे। और अगर अन्त समय पर तुमको बाबा फकीर या कोई और स्वरूप लेने आये तो तुम आवागमन से नहीं बच सकते। हजूर महाराज जी ने भी अपनी प्रेम वाणी में यही फरमाया है कि अन्त समय फिल्म चलती है गुरू भी आजाता है, शब्द भी सुना देता है फिर कुछ समय के लिए तुमको ऊपर के लोकों में रहना पड़ेगा। वहां गुरू के दर्शन और सतसंग भी मिलता रहेगा। फिर जब कोई सन्त सतगुरु वक्त इस संसार में आयेगा फिर वह जीव ऊपर के लोक से आकर इस संसार में जन्म लेगा और उस सन्त सतगुरु के सम्पर्क में आकर और बाकी की कमाई पूरी करके अपने आद घर प च जायेगा। बाकी की कमाई क्या है? यह ज्ञान मुझे तुम लोगों से मिला कि मैं किसी के अन्तर नहीं जाता। जाने वाला संस्कार है और तुम्हारा अपना ही मन है। इसलिए इस जिन्दगी में प्रकाश और शब्द को पकड़ो। तब आवागवन समाप्त होगा। वरना लाख तुम बाबे फकीर को कपड़े देते रहो, रुपये देते रहो और सेवा करते रहो। तुम्हारा आवागवन समाप्त नहीं होगा।

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

मन से बचे भक्त दास, सुख दुख की त्याग आस,
राधास्वामी संग निवास गुरू के नाम लेवा ।

जब तक कोई आदमी मन के चक्र से नहीं निकलता वह आवागवन से पार नहीं जा सकता ।

खाक में दुनियां मिली, और खाक ही है वह मुदाम,
वह खुशी से शादमां रहता है हरदम सुबह और शाम ।
अब दो महबूदियत महबूब से आजाद है ।
खुश मजस्सम खुश है दिल का, रूह का वो शाद है ।

अब दो महबूदियत से मुझे किसने निकाला ? आप लोगों ने दया हजूर दाता दयालजी महाराज की है केवल इस एक ख्याल से कि मैं किसी के अन्दर नहीं जाता मैं इससे निकल गया और मन के झगड़ों से आजाद होगया ।

जिसको देखो इस तरह, समझो वह है सच्चा फकीर,
दस्तेगोरे दो जहां और दो जहाँ का है वो पीर ।

चूंकि मैं इस राज को जानता हूँ और इस अवस्था में रहता हूँ। इसलिए हो सकता है कि मेरी रेडियेशन का प्रभाव दूसरों पर पड़ता हो। हर एक चीज से उसकी रेडियेशन निकलती है। जहां भी कोई जाता है वहां उसकी रेडियेशन फैलतीं है जैसे एक चोर चोरी करने के बाद जिस रास्ते से जाता है पुलिस के कुत्ते उसी रास्ते से जाकर उसको पकड़ लेते हैं। इसलिए शास्त्र कहते हैं कि मन, वचन, कर्म से शुद्ध रहो। वरना जहां जाओगे गन्दगी फैलाओगे। हैजा या प्लेग का बीमार स्वयं किसी को बीमारी नही देता। बल्कि उसके कीटाणु दूसरों में प्रवेश होकर उसको बीमार करते हैं।

आग लगी आसमान को, झड़-झड़ गिरे अंगार।
जो न होते सन्त जन, जल मरता संसार।

सन्त दो प्रकार के होते हैं। एक खामोश रहने वाले और एक बोलने वाले। स्वामी विवेकानन्द एक साधु के पास गये और कहा कि कानों में उँगलियां डाल कर मत बैठो। कोई परोपकार का

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

काम करो। उसने कहा कि विवेकानन्द ! अमेरिका में वह स्त्री कौन थी, जिसके साथ तेरी बातचीत हुई थी। यह सुनते ही विवेकानन्द की आंख खुल गई। उस साधु ने कहा कि जाओ ! तेरा काम तेरा है और मेरा काम मेरा है।

अपने घरों में शान्ति रखो। शारीरिक और मानसिक ब्रह्मचर्य की रक्षा करो। मन को साफ रखो। जब तक किसी के अन्तर में गन्दगी है कपट है निज स्वार्थ है तो वह लाख भाषण देता रहे। कोई लाभ दूसरों को नहीं पहुंच सकता। अगर कोई आदमी सच्चे विश्वास से किसी फकीर के पास जाता है तो वह सवाल करे या न करे उसका काम होना चाहिये। शर्त यह है कि सवाल उसका अपना हो। वरना वह फकीर नहीं। यह प्रकृति का कानून है Low of Nature है अगर एक स्त्री अपने पति को कामातुर नहीं कर सकती तो वह स्त्री नहीं है। ऐसे ही अगर एक फकीर अपने शिष्य की जिन्दगी को बदल नहीं सकता तो वह फकीर नहीं है। मगर अगर पति ही नामर्द है तो स्त्री क्या करे। ऐसे ही फकीर के पास जाने वाले में अगर श्रद्धा और विश्वास नहीं है तो फकीर क्या करे ? जैसे हैजे का बीमार स्वयं किसी को बीमारी नहीं देता बल्कि उसके कीटाणु दूसरों को बीमार करते हैं। ऐसे ही सन्त के पास जाने से उसकी रेडियेशन से दूसरों की अवस्था बदलनी चाहिए। मैं फकीर बनने की कोशिश करता रहता हूँ। मगर कभी गिर भी जाता हूँ। मैं कल सतसंग में रोया। गिर गया। मुझे गिराने वाले इन महात्माओं के भाषण थे। सोचा कि शायद मैं गलती पर हूं इसलिये मेरी आंखों में आंसू आगए।

आया जो कुछ भी समझ में, तेरे लिए लिख दिया,
तूने फैलाया था दामन, आज उसको भर दिया।
जात में अपनी हुआ गुम, तू भी गुम होना कभी,
मंजिले मक़सद पर पहुंचोगे, यह सुनले अभी।

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

मैं अपने घर जाना चाहता था। दाता फरमाते हैं कि फकीर ! मैंने तुमको सच्ची बात बता दी तो आवद और महबूदियत से अलग हो जा। और इसलिए उन्होंने मुझे यह काम दिया था।

देह के बन्ध फकीर जो आवे, बन्ध, निर्बन्ध सोई।
बन्ध कर बन्ध हुए जीव छुड़ाये, समझे यह गति कोई॥

मैं कहता हूँ कि मैं अनामी धाम से आया हूँ, और मैं संत सतगुरु हूँ। यह सब फर्जी बन्धन है। जो लोग विश्वास से आते हैं उनके काम हो जाते हैं।

इसलिए ही सबसे ज्यादा, मुझको तुझ पर नाज है,
नाम रोशन तुम करोगे, यह दिली आवाज है।

वह नाम महर्षि जी, महाराज का नाम नहीं। वह नाम क्या है ? बहुत कुछ बता दिया। मेरे ख्यालात को समझने वाली साधारण दुनिया नहीं है। केवल दिमाग वाले ही समझेंगे। आप सतसंगियों ने मुझ पर जितनी दया की है मैं उसको भुला नहीं सकता सायंकाल को मैं बजाए हजूर दाता दयाल जी, महाराज की स्तुति के आप लोगों की स्तुति करूँगा। केवल इस एक ख्याल से कि मैं किसी के अन्दर नहीं जाता मेरी जिन्दगी ने पलटा खाया। जिस लामकानी का यह संत गीत गाते थे वहां तक मुझे आप लोग ले गए। मैंने इस राज को खोल दिया। दूसरे महात्माओं ने समय के अनुसार इस राज को नहीं खोला। या अपनी जाती गरज की बजह से नहीं खोला। यह मुझे पता नहीं। सबको राधास्वामी।

[शब्द]

सङ्गत कर गुरु की सखी ! घट विवेक आवे (टेक)

१. अमृत रस बचन भरे, मन आनन्द आवे। सङ्गत कर
२. ज्ञान ध्यान भक्ति सूझे, काल न सतावे। सङ्गत कर
३. योग युक्ति यतन मिले, भ्राँति भर्म जावे। सङ्गत कर
४. चंचल मन अचल बने, विकलता नसावे। सङ्गत कर
५. राधास्वामी गुरु के गुण को, साँसों साँस गावे। सङ्गत कर

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

प्रवचन

हजूर परमदयाल जी महाराज मानवता मन्दिर होशियारपुर

दिनांक १३ अप्रैल १९७६

आपको बैशाख महीना और नया साल मुबारक हो। मैं अपने आपसे पूछता हूँ कि फकीर ! तू ने यह मकड़ी का जाल क्यों बनाया सत्संग कराते हो ? मैं मैं एक साधारण हिन्दू और ब्राह्मण के घर पैदा हुआ। बचपन से ही देवी देवता राम और कृष्ण की पूजा का विचार था। जीवन ने पलटा खाया। मैं राम को मिलने के सिलसिले में हुजूर दाता दयाल महर्षि शिवब्रतलालजी महाराज के चरण कमलों में प च गया। उन्होंने मुझे राधास्वामीमत की शिक्षा दी। इसमें सब मत मतान्तरों का खण्डन था। इसलिये दिल उदास होगया। मगर हुजूर दाता दयालजी महाराज पेर मेरा विश्वास नहीं टूटा। इसलिए उस समय मैंने प्रण किया था कि इस मार्ग पर बिलकुल सच्चा होकर चलूँगा और जो मेरा अनुभव होगा वह संसार को बता जाऊँगा। इसलिए यह मेरा अपना ही कर्म भोग है। दूसरे मेरे जम्मे हुजूर दाता दयालजी महाराज ने तीन कर्तव्य लगाये थे—

१. तू तो आया नर देही में धर फकीर का भेषा।
दुखी जीव को अङ्ग लगा कर लेजा गुरु के देशा।
तीन ताप से जीव दुखी हैं निबल अबल अज्ञानी।

२. तेरा काम दया का भाई नाम दान दे दानी।
तेरा रूप है अद्‌भुत अचरज उत्तम तेरी देही।
जग कल्याण जगत में आया परम दयाल सनेही।

३. ले परसाद यह सतसंग का होजा भवनिधि तारन।

क्योंकि मेरे जिम्मे कर्तव्य था इसलिये मैं यह काम करता हूँ।

मैं अपना क्या अनुभव कहना चाहता हूँ ? सब कहते हैं कि ईश्वर को पूजो, हम भी पूजते हैं। लेकिन सन्त कहते हैं कि मालिक जो है वह ईश्वर प्रमेश्वर ब्रह्म और पारब्रह्म सब से ऊँचा है। मुझे इस बात की समझ नहीं आती थी और मैं हुज़ूर दाता दयालजी महाराज के पास रोया करता था कि मुझे वह घर दिखा दो जो आप सन्तों का है। उन्होंने १९१९ में मुझे मत्था टेक दिया और फरमाया कि नामदान दिया करो और सत्संग कराया करो, तुमको सच्चा सतगुरु राधास्वामी दयाल सत्संगियों के रूप में मिलेगा और सत्संगी तेरा बेड़ा पार करेंगे और अब होगया। सन्त कहते हैं कि अपने आपको जानो—

आप आप को आप पहचानो, कहा और का नेक न मानो।

गुरु नानक साहिब ने कहा है—

कह नानक बिन आपा चीने, मिटे न भरम की काई।

सब ही कहते हैं कि अपने आपको जानो। मैंने अपने आपको जानने का बहुत यत्न किया मगर न जान सका। मैं तो पहले राम को मिलने के यत्न में था, फिर हुज़ूर दाता दयाल जी महाराज के पीछे पड़ा रहा; फिर प्रकाश और शब्द को देखता ओर सुनता रहा। देखने वाला और है और प्रकाश और शब्द और है। जब तक मैं राम, कृष्ण प्रकाश और शब्द की पूजा करता रहा मैं अपने आपको न जान सका। कैसे पता लगा ? जब से मुझे आप लोगों से यह पता लगा कि मेरा रूप आप लोगों के अन्तर प्रकट होता है और आपके कई प्रकार के काम कर जाता है लेकिन मैं नहीं होता और न ही मुझे कोई पता होता है तो मुझे विश्वास होगया कि मेरे अन्तर भी जो कुछ प्रकट होता है वह सब माया है तब मैंने मन को छोड़ कर आगे जाने का यत्न किया। आगे है प्रकाश और शब्द। मैं प्रकाश और शब्द में जाता हूँ। मैं यह जाननाचाहता हूँ कि जो वस्तु प्रकाश में रहती हुई प्रकाश को देखती है और शब्द में रहती

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

हुई शब्द को सुनती है वह क्या है मगर उसका पता नहीं लगत. वह वेअन्त है।

ऐ संसार वालो ! और ऐ धार्मिक और पंथिक संसार वालो मैं शपथ पूर्वक कहता हूँ कि मैं किसी के अन्तर नहीं जाता और न ही ऐसी घटनाओं का मुझे कोई पता होता है। मुझे प्रति दिन पत्र आते हैं और लोग मिलते हैं कि बाबाजी ! आपका रूप प्रकट हुआ, खुली आंखों से आपके दर्शन किये और आपने हमें यह कहा और वह कहा और यह काम किया। जो लोग मुझे नहीं भी जानते उनके अन्तर मेरा रूप प्रकट हुआ और फिर वे लोग मेरे पास आये और सारा समाचार बताया। मिसरिख (जिला सीतापुर) के एक एक आदमी के घर सन्तान नहीं थी। उसको किसी ने बताया कि देवी का पाठ करो। उसने पाठ आरम्भ कर दिया। देवी प्रकट हुई और कहा कि तेरे कर्म में सन्तान नहीं है इसलिये तुमको न ब्रह्मा और न विष्णु सन्तान नहीं दे सकते हैं। हां ! बाबे फकीर के दर्शन करो तुम्हारे सन्तान हो जायेगी। अमरीका में बहुत से आदमियों के अन्तर मेरा रूप प्रकट होता है और वे मुझे वहां बुलाते हैं। मैं कहता हूँ कि मैं किसी के अन्तर नहीं जाता। ये जितनी करामातें लोगों के साथ होती हैं और वे समझते हैं कि मैं करता हूँ यदि इनको एक जगह इकट्ठा किया जाये तो एक बहुत बड़ी किताब बन जाये लेकिन मैं इसकी आज्ञा नहीं देता।

मैं जब कभी ऊपर पहुँच जाता हूँ तो वहां मुझसे ठहरा नहीं जाता। लेकिन मुझे यह समझ आगई कि मैं कौन हूँ। मैं न फकीर हूँ, न मन हूँ, न प्रकाश हूँ और न शब्द हूँ। मगर हूँ सही कुछ, लेकिन पता नहीं कि क्या हूँ। अब मैं सोचता हूँ कि फकीर ! यह बताओ कि जो वस्तु किसी के अन्तर समाती है वह बड़ी है या जिसके अन्तर समाती है वह बड़ी हैं।

मेरा ही रूप प्रकाश को देखता और शब्द को सुनता है। वह वस्तु बड़ी है जो प्रकाश में रहती हुई प्रकाश को देखती है और शब्द में रहती हुई शब्द को सुनती है इसलिए सन्तोंने उसको मालिक और सब का आधार बताया है। हम सब उसका अंश हैं। प्रकाश और शब्द ने हमको यहां बनाया और दुख और सुख में फँसाया। इस संसार में दुख और सुख से कोई भी नहीं बच सकता जब तक कि उसको अपने रूप का ज्ञान न हो। मैं जानता हूँ मगर मुझसे वहां ठहरा नहीं जाता। एक दो मिनट के बाद फिर प्रकाश और शब्द में आजाता हूँ। हर समय तो कोई भी वहां रह नहीं सकता। वह तो अनुभव है। तो फिर उसका लाभ क्या और मैंने यह काम क्यों किया ? इस समय सांप्रदायक भेद भाव का जोर है। भारतवर्ष के बटवारे का कारण यही भेद भाव था और अब लिवनान में क्या हो रहा है ? सन्त कहते हैं कि अपने आपको जानो। ये झगड़े सब अज्ञान के कारण हैं। इस अज्ञान के कारण संसार में भिन्न भिन्न धर्म बन गये। संसार में कोई राम को पूजता है, कोई कृष्ण को पूजता है, कोई किसी देवी देवता को, कोई बाबे फकीर को या किसी और गुरू को पूजता है। ये सब अपने ही मन को पूजते हैं, मुझे तो पता नहीं होता लेकिन लोग कहते हैं कि मेरा रूप उनके अन्तर प्रकट होता है, दवाइयां बता जाता है, पुत्र दे जाता है, परचे हल करा जाता है और मरते समय उनको ले जाता है आदि-आदि तो सिद्ध हुआ कि जिसको तुम पूजते हो वह तुम्हारा अपना ही बनाया हुआ ईश्वर है असली मालिक नहीं। असली मालिक तो वह है जो सब का आधार है। इसलिये मैं संसार को यह कहना चाहता हूँ कि जिस ईश्वर को तुम पूजते हो वह तुम्हारे ही मन की कल्पना है वह असली ईश्वर नहीं है। न बाबा फकीर और न कोई और गुरू, न राम न कृष्ण न देवी न देवता। कोई भी किसी अन्तर बाहर से नहीं आता। मैं चाहता हूँ कि ये वर्तमान महात्मा जो गुरू बनकर काम करते हैं वे मेरे

सामने आयें या वे अपनी आत्मा को टटोलें कि क्या वे किसी व्यक्ति को उसके अन्त समय लेने जाते हैं ? यदि नहीं जाते तो वे संसार को सचाई वर्णन करें और यदि सचाई वर्णन नहीं करते तो वे दोषी हैं। मैं आया हूँ निबल, अबल और अज्ञानी जीवों के लिए और उनको गुरू के देश में ले जाने के लिये जैसा कि मेरे नाम आज्ञा है जो कि ऊपर वर्णन किया गया है। गुरू का देश क्या है ? अनामी, परम-तत्व आधार या अकाल पुरुष। मैंने गुरु बन के यह देखा है कि गृहस्थियों को मूर्ख बना कर अपने जाल में फँसाया गया और लूटा गया। इसी अज्ञान के कारण मानव जाति बट गई और नाना प्रकार के धर्म बन गये और घृणा और द्वेष में फँस गये। जिसको तुम पूजते हो वह तुम्हारा अपना ही मन है। शास्त्र इसको छाया कहते हैं। योग वाशिष्ट बहुत उत्तम ग्रंथ है। जो कुछ मैं कहता हूं वही योग वाशिष्ट कहता है अन्तर केवल वर्णन शैली में प्रयोग किये गये शब्दों का है। इसलिये मैंने मकड़ी का जाला नहीं बनाया तुम लोगों की दया से मेरी आंख खुली। बाहर जाता हूं लोग कहते हैं कि आपका रूप प्रकट होता है। मैं कहता हूँ कि मैं नहीं, तो वे कहते हैं कि आप नहीं जाते यह आपका फोटो जाता है। तो सिद्ध हुआ कि जो कुछ किसी को मिला वह उसका अपना ही विश्वास है। इसलिये तुम राम, कृष्ण, देवी देवता, बाबा फकीर या कोई और गुरु जिसको तुम्हारी इच्छा हो पूजो और अपने संसार की मनो कामनायें पूरी करलो। इन झाड़ों में क्या रखा है।

जग में घोर अंधेरा भारी तन में तम का भण्डारा।
जाग्रत स्वप्न सुषुप्ति देखा भूल भुलियाँ धर मारा ॥

मैंने धार्मिक संसार के झगड़ों को दूर करने के लिए इस भेद को खोला। लेकिन सन्तों ने परदा रखा। वह समय और था। कबीर साहिब ने धर्मदारा को यह भेद बताने के बाद उसका मुँह बन्द कर दिया था।

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY PURNADAYAL

धर्मदास तोहे लाख दुहाई, सार भेद न बाहर जाई।

राधास्वामी दयाल ने फरमाया है।

संत बिना कोई भेद न जाने, वे तोहे कहें अलग में।

इस परदे के कारण आजकल हजारों गुरु बने हुए हैं लेकिन कोई सच्ची बात नहीं बताता। मैं हूँ समय का सन्त सतगुरु। अनामीधाम से फकीर के चोले में इसलिए आया हूँ कि असलियत को समझूं और लोगों को असलियत बताऊं। इस जनून में आयु बीत गई, जो समझ में आया वह कहता हूँ कि तेरा अपना ही विश्वास काम करता है जहाँ इच्छा हो विश्वास रख। जो वस्तु तुम किसी देवी देवता की पूजा करने से प्राप्त करोगे वही वस्तु तुम राम कृष्ण या किसी गुरु की पूजा करने से ले सकते हो। अब कलयुग में सतयुग का अन्तरा आ रहा है ऐसा ज्योतिषी लोग कहते हैं और समाचार पत्रों में भी आता है। उस समय मेरी यह शिक्षा काम करेगी। इस विचार से मैंने यह काम किया है। साधारण जीव तो संसार चाहते हैं। इसको प्राप्त करने के लिए सन्तों ने रीतिरिवाज और नियम बनाये। मैं विद्वान नहीं हूँ मैं अमली (Practical) बात कहता हूँ सुनो! रात को तुम स्वप्न में चले जाते हो। किसी को मुक्का मारते हो तो तुम्हारा हाथ हिलता है स्वप्न में डरते हो और बड़बड़ाते हो तो तुम्हारी जबान हिलती है पास में सोने वाले तुम्हारी आवाज को सुनते हैं। स्वप्न में कल्पित स्त्री बना लेते हो, उसके साथ विषय भोगते हो, तुम्हारा वीर्य भी निकल जाता है तो इससे सिद्ध हुआ कि जो विचार तुम्हारे वश में भी नहीं है उसका भी प्रभाव हम पर पड़ता है तो जो हम लोग जाग्रत अवस्था में कर्म करते हैं किसी की निन्दा किसी की चुगली, किसी की प्रसंशा करते हैं, किसी का बुरा सोचते हैं और किसी के साथ धोखा और फरेब करते हैं उसका प्रभाव हम पर क्यों नहीं पड़ेगा। इसलिए शिव संकल्प अस्तु, के नियम पर चलो और अपने विचार अच्छे रखो। अपनी आदतों और

आशाओं को ठीक रखो। मैंने सरल रूप में आपको बता दिया कि यह काम क्यों करता हूँ। नब्बे साल का हो गया हूँ। हजूर दाता दयाल जी महाराज ने आज्ञा दी थी कि चोला छोड़ने से पहले शिक्षा को बदल जाना। गुरुऋण से उत्तीर्ण होने के लिए मैंने यह काम किया है, हो सकता है कि मैंने जो कुछ समझा है वह गलत हो मुझे कोई दावा नहीं। लेकिन मैं चाहता हूँ कि यदि मैं गलत कहता हूँ तो ये महात्मा मेरा खण्डन करें। मुझे कोई दुख नहीं क्योंकि मैं कोई ठेकेदार तो हूँ नहीं। मगर मेरे सामने कोई आया नहीं। क्यों ? यह सच्चाई वर्णन नहीं करते क्योंकि इनसे मान प्रतिष्ठा और धन नहीं मिलता है। तुम लोग अज्ञानी जीव हो, सहारा चाहते हो इसलिए मुझे घेर लेते हो लेकिन मुझे मत्थे टेकने से तुम्हारा बेड़ा पार नहीं होगा। मेरी बात पर अमल करने से होगा।

दाता ! आपने काम दिया। कर चला। अच्छा किया या बुरा किया इसका मुझे पता नहीं। सच्चाई की तलाश में जीवन बीता है। मैंने यह समझा है कि जो कुछ किसी को मिलता है वह उसका अपना ही कर्म और अपना ही विश्वास है और जो कुछ हम करते हैं और सोचते हैं उसका प्रभाव हम पर पड़ता है। मालिक को मिलने का मार्ग और है और संसार में सुखी रहने का मार्ग और है।

कैसे मैं आरती करूँ तुम्हारी, महा मलिन प्रभु देह हमारी।
छूती से उपजे संसारा, मैं छुतिया गुण गाऊँ तुम्हारा ॥

यह संसार (Radiation) का है। सबके अन्तर से Radiation निकलती है। हम एक दूसरे के संस्कारों से प्रभावित होते हैं। तो जब तक हम संस्कारों के अधीन हैं हम अपने घर नहीं जा सकते। धर्मदास कहते हैं कि मेरा शरीर बहुत मलिन है इसलिए मैं कैसे आगे जा सकता हूँ। मैं वहुत प्रार्थना किया करता था। प्रार्थना करते २ बेहोश हो जाया करता था। अब समझ आई कि वह तेरे

ही मन की दशा थी।

झरना झरे दशों दिश द्वारे, कैसे मैं आऊँ निकट तुम्हारे

जब तक कुछ न कुछ संकल्प करते रहोगे, विचार करते रहोगे, अपने अन्तर में शक्लें बनाते रहोगे तुम मालिक को नहीं मिल सकते। यह ज्ञान मुझे तुम लोगों से मिला जिन्होंने मुझे गुरु माना। इसलिए मैं सच्चे दिल से आप लोगों को नमस्कार करता हूँ क्योंकि आप लोगों की दया से मेरी आँख खुलीं। मैं गुरु बनने के लिए हजूर दाता दयाल जी महाराज की शरन में नहीं गया था। मैं तो सचाई की खोज में गया था और मालिक को मिलने के लिए गया था। उन्होंने जब देखा कि इसको बात की समझ नहीं आती तो उन्होंने मेरे साथ खेल खेला और मुझे गुरू पदवी दे दी। अब आप लोगों की कृपा से मुझे इस भेद की समझ आई। इस भेद को अब खोलने की आवश्यकता भी है ताकि लोगों को असलियत की समझ आये और आपस का बैर विरोध समाप्त हो क्योंकि अब अपना राज है। महात्मा गाँधी ने १९२१ में हिन्दू और मुसलमानों को एक प्याले में पानी पिलाया और १९४७ में दोनों ने एक दूसरे के सिर काटे। क्यों ? Root cause वर्णन नहीं किया। मैं हूँ समय का सन्त सतगुरु, और सच्चा ज्ञान देता हूं कि यह विचारों का संसार है। इसलिए अपने विचारों को ठीक रखो ताकि इससे तुम्हारा भी भला हो और दूसरों का भी भला हो। मैं विद्वान नहीं हूँ और न ही किताबों का हवाला देता हूँ। मैं क्रियात्मिक जीवन का पाठ पढ़ाता हूँ। आप लोग देश के कोने कोने से काफी खर्च करके यहां आये हैं। मैं अपनी जिम्मेदारी समझता हूँ। इसलिए मैं तुम लोगों की भलाई के लिए तुमको कुछ देना चाहता हूँ। तुम लोग न लो तो तुम्हारी इच्छा मगर मेरी आत्मा पर अब कोई बोझ नहीं है। ऐ गृहस्थियो ! मैं अनामी धाम से तुम्हारे लिए ही फकीर के चोले में तुमको सतज्ञान देने के लिए आया हूँ ताकि तुम लूट से बच जाओ। देखो ! लोग

मेरे पास आते हैं। प्रसाद ले जाते हैं। उनके बच्चे हो जाते हैं। लेकिन मेरी लड़की के विवाह को २४ साल हो गये। मैंने कई बार प्रसाद दिया लेकिन उसके कोई नहीं हुआ। अब तुम बताओ यदि मैं करता हूं तो मेरी लड़की के भी बच्चा हो जाता। और सुनो! लोग मुझसे प्रसाद ले जाते हैं वे राजी हो जाते हैं और मैं जब बीमार होता हूं तो डाक्टरों के पीछे दौड़ता हूं। इसलिए यदि मैं ही करने वाला होता तो मैं अपने आपको स्वस्थ न कर लेता। मैं आप लोगों को अज्ञान में नहीं रखना चाहता। तुम्हारी इच्छा करे आओ इच्छा न करे मत आओ। मेरी कोई किताब पढ़ो या मत पढ़ो। इच्छा करे मन्दिर की सहायता करो इच्छा न करे मत करो। अब मेरी आत्मा पर कोई पाप नहीं।।

जो प्रभु देवो अग्र की देही, तब मैं पाऊँ साहिब नाम सनेही।

अग्र सुगन्ध वाला होता है और उसमें से सफेद रोशनी निकलती है। भाव यह है कि जब तक प्रकाश में अर्थात सफेद रोशनी में नहीं जाओगे और शब्द को नहीं पकड़ोगे तुम आगे नहीं जा सकते। प्रकाश है पारब्रह्म और शब्द है शब्द ब्रह्म। नूर और कलाम। वही सनातन धर्म कहता है और वही मुसलमान कहते हैं और यही संत मत की शिक्षा है, कोई अन्तर नहीं। यदि अन्तर है तो केवल शब्दों का है। सनातन धर्म में गायत्री मंत्र है और प्राणायाम मन्त्र है। लोगों को असलियत का तो पता नहीं है केवल मन्त्र की रट लगाना जानते हैं। धर्म चाहे कोई भी हो जब तक कोई मन से ऊपर नहीं जायेगा प्रकाश प्रकट नहीं होगा। तुलसीदास जी ने लिखा है—

गो गोचर जहां लग मन जाई, तहां लग माया कृत जान्यो भाई।

अपने अन्तर प्रकाश प्रकट करो। मैं प्रोफेसर वशिष्ट जी को इसलिए बुलाता हूं कि यदि मेरी बात इनकी समझ में आ जाये तो यह अपने दायरे में पत्थर पूजने के बजाय सनातन धर्म वालों को प्रकाश प्रकट करने की शिक्षा दो राधास्वामी मत में होते हुए मेरी बात को शायद सनातनधर्म वाले न सुनें। इन लोगों को बुलाने का भी मेरा कोई उद्देश्य है। प्रिंसीपल रलाराम साहिब आर्य समाजी थे। संध्या करते थे। उन्होंने मेरे सामने माना कि मैं

असलियत को अब समझा हूँ। संध्या में एक मन्त्र आता है कि ऐ मालिक ! जिनसे हम बैर करते हैं या जो हमारे साथ बैर करते हैं हम दोनों के इन भतों को जला दो। हम संध्या के मन्त्रों की रट तो लगाते हैं मगर इनको समझता कौन है और इन पर अमल कौन करता है। हम सब एक दूसरे के खिलाफ बोलते हैं। अमली जीवन किसी का भी नहीं सब बाचक ज्ञानी हैं और केवल भाषण देना ही जानते हैं। यदि परमार्थ चाहते हो तो पहले मन को साफ करो। मन को वश में करने के लिए सुमिरन और ध्यान है ताकि मन अनुचित विचार न उठाये। राम राम जपो चाहे अल्ला २ करो मगर अपने गन्दे विचारों को रोको और अच्छे विचार रखो। कोई भी धर्म जीवों को पार करने का ठेकेदार नहीं है। यह तो अमल और प्रेम का सौदा है। तो मैंने मकड़ी का जाला नहीं बनाया। मैं तो स्वय दीवाना था। सिर पर गुरुऋण था कि शिक्षा को बदल जाना हो सकता है जो कुछ मैंने समझा है वह गलत हो। इसलिए मैं यह नहीं कहता कि तुम मुझे Follow करो। मैं तो अपना कर्म भोगता हूँ। यदि मैं गलती पर भी हूँ तो मैं दोषी नहीं क्योंकि हजूर दातादयाल जी महाराज और हजूर बाबा सावनसिंह जी को क्या यह ज्ञान नहीं था कि यह सच्च बोलेगा ? मेरी नीयत बिल्कुल साफ है। आप लोग दूर दूर से आये हैं। मैं सच कहता हूँ कि मैं अपनी जिम्मेदारी को महसूस करता हूँ। मैं सोचता हूँ कि फकीर ! तुम इनको क्या दे सकते हो ? मैं शुभ भावना देता हूँ कि तुम लोग जिस उद्देश्य के लिए मेरे पास आये हो मालिक तुम्हारी मनोकामना पूरी करे। इसके सिवाय मेरे पास और कुछ नहीं है। लोगों के विश्वास के अनुसार उनको फल मिलता है और उसका Credit (His holyness) पण्डित फकीरचन्द जी को मिलता है। जिस काम से परलोक खराब हो वह काम क्यों किया जाये। शुभ भावना का प्रभाव होता है। जब एक आदमी अपने संकल्प से मेरा रूप बनाकर उससे काम ले लेता है तो मानना पड़ता है कि संकल्प में शक्ति है। तो क्या मेरे संकल्प में शक्ति नहीं ? जब मैं सच्चे दिल से चाहता हूँ कि तुम्हारा भला हो तो होना चाहिए और यदि नहीं होता तो मैं दोषी हूँ। क्योंकि विचार में

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

शक्ति है इसलिए अपने विचार से अपना, अपने परिवार का, अपने मिलने वालों का और अपने देश का भला चाहो। मिसमरेजम वाला दिवार पर एक काला निशान बनाकर उसको ध्यान से देखता रहता है जब वह चिन्ह उसको सफेद दिखाई आने लगता है तो उसकी विचार शक्ति (Will Power) बढ़ जाती है और वह जो भी अपने मामूल को कहता है वह करता है। उसने बाहिरे में ध्यान योग किया ऐसे ही तुम भी एक मूरत बनाओ। उसकी आंखों और माथे पर ध्यान जमाओ और अपने अन्तर will power पैदा करो। इसलिए मैं पहला आदमी हूँ जो नाम नहीं देता और चेले नहीं बनाये क्योंकि अनाधिकारी को उसकी (will power) खा जायेगी और या दूसरों को खा जायेगी। ये लोग जो इस समय नाम देते हैं। जो भी आया नाम। ये लोग नाम नहीं देते बल्कि विष देते हैं। मैं डिगरी होल्डर हूँ। यदि पांच छः हजार आदमियों को भी नाम देता और यदि एक रुपया हर महीने हर आदमी मुझे देता तो मुझे पाँच छः हजार रुपया हर महीने आता। इसलिए सुमिरन ध्यान से अपनी (will power) को बढ़ाओ ताकि तुम्हारे संसारी काम होते रहें। आजकल के गुरुओं ने तुम्हारे लिए नाम नहीं दिया है बल्कि अपने डेरे धाम और अपने नाम के लिए नाम दिया है। यदि मैं गलत कहता हूँ तो ये लोग मुझे बतायें। हजूर महाराज जी ने अपनी प्रेम वाणी में लिखा है कि जिनके मन गन्दे हैं और वे अपने गन्दे विचारों को रोकना नहीं चाहते या रोक नहीं सकते उनको शव्द योग नहीं करना चाहिए वरना उनकी बहुत हानि होगी। इसलिए पहले मन को साफ करो और यह सोचो कि मन के गन्दे विचार दूर हों। मैं इसी लिए सतसंग कराता हूँ और किसी को नाम नहीं देता। जो कुछ किसी को मिला वह उसके विश्वास का फल मिला। गोपीलाल कृषक और दयालदास को मैंने नाम नहीं दिया उन्होंने मेरे विचार को ग्रहण कर लिया और ध्यान करने लग गये और उनके अन्तर करश्मे होने लग गये।

इस संसार में रहते हुए तुमने क्या करना है? मनु की आज्ञा माननी है। ऋषियों ने बहुत कहा। सनातन धर्म एक सागर है और सागर में हर

प्रकार के जानवरों के लिए खुराक है। राधास्वामी मत भी सनातन धर्म की एक शाखा है। मैं पक्षपाती नहीं हूँ। इसमें निवृति मार्ग है। तुम लोग गृहस्थी हो। तुम्हारे लिए यह मार्ग नहीं है। यह तो उनके लिए है—

विषयों से जो होय उदासा, परमार्थ की जा मन आसा।
धन संतान प्रीत नहीं जाके, जग पदार्थ चाह न ताके॥
तन इन्द्री आसक्त न होई, नींद भूख आलस जिन खोई।
विरह बान जिन हृदय लागा, खोजत फिरे साध गुरु जागा॥

नाम उनके लिये है जिनको संसारी इच्छा न हो। गृहस्थियों के लिए वेद मार्ग है। अच्छे विचार रखो। क्योंकि मेरे जिम्मे कर्तव्य है इसलिए मैं लगभग ३६-३७ साल से यह काम कर रहा हूं। आप महात्मा लोग आये हैं यदि आप समझें कि मैं गलती पर हूँ तो आप बड़ी खुशी से मेरा खण्डन करें मुझे कोई दुख नहीं और न ही मुझे कोई दावा है। मेरा तो जीवन का यह अनुभव है जो वर्णन करता हूँ। यदि दूसरे सन्तों को अपना कहने का अधिकार था तो मुझे भी अधिकार है। उन्होंने तो दावा किया मगर मैं दावा नहीं करता। मैं तो कहता हूँ कि हो सकता है कि मेरा अनुभव गलत हो।

मैंने महात्माओं की जीवनियों के हालात पढ़े। पलटु साहिब को खौलते हुये तेल के कड़ाहे में फेंक दिया गया। गुरु अर्जुनदेव के साथ उनके भाई ने बैर भाव रखा। कबीर साहिब अन्तिम आयु में ११॥ साल दर्द गुरदा के रोगी रहे स्वामी रामकृष्ण परमहंस और पण्डित ब्रह्म शंकर दत्त कैंसर के शिकार हुये। तो मानना पड़ता है कि ये इन सब के कर्म थे और कर्म का फल सबको भोगना पड़ता है। इसलिए मैं डर गया। मैं आपको गलत नहीं कहता। मैं सोचता हूँ कि फकीर ! जब तू किसी के अन्तर नहीं जाता और यदि तू सचाई नहीं बतायेगा तो लोग तो तुमको धन धान्य और मान प्रतिष्ठा देंगे और यदि तू इनको ग्रहण करेगा तो फिर तू बता कि तू मरेगा या जियेगा ? यह सब संत जब मुझे मिलते हैं तो ये मेरे सामने मानते हैं कि पंडित जी ! हम किसी के अन्तर नही जाते और न ही हमको कोई पता होता है। लेकिन पब्लिक में यह बात प्रकट नहीं करते मेरी समक्ष में नहीं

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

आता कि क्यों प्रकट नहीं करते। मैं तो अपनी जान बचाना चाहता हूँ। मैंने क्या लेना गुरुआई से। यदि मैं सचाई नहीं बताता तो जिनके अन्तर मेरा रूप प्रकट होता है वे मेरी सेवा करेंगे और वह सेवा मुझे खा जायेगी।

कर्म प्रधान विश्व कर राखा, जो जस कीन तैसो फल चाखा।

मैं इन गुरुओं से कहना चाहता हूँ कि यदि तुम लोगों के अन्तर प्रकट होते हो और उनके काम करते हो तो तुम धन्य हो। मगर क्योंकि मैं नहीं जाता और न ही मुझे इन बातों का कोई पता होता है। इसलिए मैं अपनी जान बचाना चाहता हूँ क्योंकि मुझे अपनी आत्मा प्यारी है। तुम कहोगे कि फिर आप यह काम क्यों करते हो। मैं हूँ समय का सन्त सतगुरु। संसार को पूरा ज्ञान देता हूँ। मैं आया ही इसलिए हूँ। इसलिए यह काम करता हूँ।

ऐ मानव ! तू स्वयं पूर्ण है। तुम्हारे अन्तर प्रकृति की सारी शक्तियें भरी पड़ी हैं। जब कोई आदमी सच्चा होकर अपने अन्तर में प्रेम करता है तो उसके अन्तर की शक्ति अपने आप उभर कर उसके काम करती है। उसी शक्ति ने ही श्रीकृष्ण जी में विराट रूप दिखाया। जो कृष्ण है वही तुम हो। मैं किसी का खण्डन नही करता। मैं पूरा ज्ञान देता हूँ। हाँ ! प्रारम्भिक श्रेणी वालों के लिए मेरी शिक्षा लाभ दायक नहीं। इस बात को मैं जानता हूँ। मगर अब मेरा वह समय नहीं रहा। जिस अवस्था में कोई रहता है वह वहाँ की बात करता है। मैं क्योंकि पांचवे पद में रहता हूँ, इसलिए अब मुझसे निचली श्रेणी की बात नहीं होती और न ही मैं कोई हेराफेरी की बात करता हूँ। तुम किसी को भी गुरु मान लो तुम्हारा विश्वास होना चाहिए। काम तो विश्वास करता है। मैंने यह देखा है कि यदि गुरू पाखण्डी भी है लेकिन चेला प्रबल विश्वास रखता है तो उसके काम होते रहेंगे। मैंने कभी किसी से यह नहीं कहा कि अपने गुरु को छोड़ दो और मुझे मानो। जिस जात पाक ने मुझे शिक्षा दी है उन्होंने लिखा है —

गुरु रूप न समझे कोई, भरम में पड़े अज्ञानी।

आप लोग आये हैं। मैं कहता हूँ कि मैं सतपुरुष हूं यद्यपि मैं अभी तक शत प्रतिशत तो नहीं बना अभी तक चार-पाँच प्रतिशत कमी है। तो फिर

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY PURNADAYAL

मैं कोई खुदा नहीं हो गया। जैसा कोई आदमी है उसकी वैसी ही Radiation निकलती है और उसके वैसे ही संस्कार दूसरों में आवेंगे। यदि गुरु पाखण्डी है तो उसमें सचाई नहीं आयेगी। लेकिन यदि गुरु पर तुम्हारा पूर्ण विश्वास है तो तुम्हारा काम बन जायेगा। जैसे बच्चे का मां पर विश्वास होता है, माँ चाहे कैसी ही क्यों न हो मगर बच्चे को वह सबसे प्यारी है। मैं यदि सचाई वर्णन नहीं करता तो यह पूजा मुझे खा जायेगी। पिछले किये हुए तो अभी भोग रहा हूं लेकिन आगे के लिए मैंने कोई बुरा काम नहीं किया। बिलकुल सचाई के साथ चला हूं। पिछली बार अमरीका गया तो लोग मेरे पास आये और कहने लगे कि आपका रूप हमारे अन्तर प्रकट होता है। मैंने कहा कि मैं किसी के अन्तर नहीं जाता। सब तुम्हारे अपने ही मन और विश्वास का खेल है। दूसरे महात्मा वहाँ जाते हैं तो लाखों डालर लाते हैं और मैं केवल ३०० डालर लाया वह भी किताबों का मूल्य। लोग भी सच्चे हैं और ये महात्मा भी सच्चे हैं। लेकिन मुझे पहले अपना आप प्यारा है। यदि कोई गुरु हेरा फेरी करके लोगों से मत्थे टिकवाता है और उनसे धन लेता है तो वह जायेगा कहां ? क्या वह खोटा कर्म नहीं है ? और क्या इस खोटे कर्म का फल नहीं मिलेगा ? मिलेगा। मैं इन गुरुओं और महात्माओं से कहना चाहता हूं कि जब तुम्हारा रूप लोगों के अन्तर प्रकट होता है तो यदि तुम किसी के अंतर नहीं जाते और सचाई वर्णन भी नहीं करते तो तुम संसार के साथ धोखा करते हो। मैं चाहता हूं कि ये लोग सचाई वर्णन करें। क्या इसलिए सचाई वर्णन नहीं करते कि धन नही आता ? अरे बाबा ! क्या पैसे को साथ ले जाओगे ? चेलों का तो काम विश्वास से बन जायेगा मगर गुरु नाश हो जायेगा। मैं महात्माओं को बुलाता हूं तो ये आते नहीं और न ही ये मुझे बुलाते हैं।

शिष्य को ऐसा चाहिए, गुरु को सब कुछ दे।
गुरु को ऐसा चाहिऐ, शिष्य का कुछ न ले ॥

भाई नन्दूसिंह जी से एक बार मैंने कहा कि अपने घर में सतसंग मत कराया करो वरना तुम्हारे बच्चों की हानि होगी। कहने लगे क्यों। मैंने कहा

कि क्या तुम्हारा रूप लोगों के अंतर प्रकट होता है ? हां होता है । क्या तु जाते हो ? नहीं । तो फिर अज्ञान के कारण लोग जो कुछ प्रसाद आ तुम्हारे घर में या तुम्हारे सतसंग में लायेंगे उसको बच्चे खायेंगे और उनका हानि होगी ।

कल सन्त ताराचन्द ने बताया कि उनके पास एक लड़की आई और कहने लगी कि मेरे अन्तर बाबा फकीर जी प्रकट हुये और कहा कि सन्त ताराचन्द जी के पास जाओ और नाम ले लो । लेकिन मैं तो गया नहीं । यदि मैंने वही काम करना होता जो दूसरे सन्त कर गये तो मैं मानवता मन्दिर बनाने के लिये सेठ दुर्गादास से मिन्नत क्यों करता । मैं हूं सन्त सतगुरु और अवतार लेकर सचाई वर्णन करने के लिए आया हूं कि ऐ मानव ! तू स्वयं पूर्ण है । तेरे अन्तर सब कुछ है । तू अपने अन्तर के दर्जो पर बैठ और सब लेलो । हजूर महाज जी ने स्वामीजी की बहुत सेवा की और जब स्वयं गुरु बने तो लिख गये कि सतगुरु शब्द स्वरूपी राधास्वामी दयाल हैं और उनके चरण प्रकाश हैं । बाहर के रूप का केवल यह कर्तव्य हैं कि वह जीव को अन्तरमुखी बना दे और प्रकाश और शब्द के साथ जोड़ दे । आजकल के गुरुओं से कहना चाहता हूँ कि जब तुम्हारा रूप किसी के अन्तर प्रकट होता तो क्या तुमको पता होता है ? यदि तुम किसी के अन्तर नहीं जाते तो क्यों सचाई नहीं बताते ? हम लोग अज्ञानी हैं । जो भी आया उसने ही हमको वश में किया । इसलिये मैं आया हूं यह कहने के लिए कि ऐ मानव ! तेरी ही नीयत, तेरे ही विश्वास और तेरे ही कर्म का फल तुमको मिलता हैं । गुरु नाम है समझ विवेक और ज्ञान का । सब कुछ तेरे अन्तर है । यह बताओ कि क्या किसी मुसलमान के अन्तर भी कभी राम या कृष्ण का रूप प्रकट हुआ है ? क्या किसी हिन्दू के अन्तर भी कभी मुहम्मद प्रकट हुआ है ? क्या कभी कोई आदमी स्वप्न में स्त्री बना और क्या कभी कोई स्त्री स्वप्न में मर्द बनी ? नहीं । क्यों ? क्योंकि ऐसा संस्कार नहीं है । इसलिये मैं तुम महात्माओं को कहता हूँ कि यदि तुम लोगों के अन्तर जाते हो और तुमको पता होता है तो मैं झूठा । वरना सचाई वर्णन करो । क्यों

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

गलत ढंग से लोगों को अपने पीछे लगाया हुआ है। मैं यह पूछने का अधिकार रखता हूं। क्यों ? क्योंकि मेरे एक दृश्य ने मुझसे जीवन में क्या कुछ नहीं कराया। मैं फकीर हूं। आप लोगों से कहता हूँ कि एक जगह विश्वास रखो। लेकिन मैं यह नहीं कहता कि मुझ पर विश्वास रखो। मैं सचाई वर्णन करता हूँ।

बुरग महादेव कई सालों से बीमार थे। मैं हनमकुण्डा गया उन्होंने मुझे बुलाया और कहने लगे कि महाराज ! बहुत कष्ट में हूँ आप दया करें। मैंने कहा ये आपके कर्म हैं। क्या कुछ दान करोगे ? उन्होंने समझा कि पता नहीं बाबाजी कितना रुपया दान मांग लें। इसलिये उन्होंने अपने लड़कों की ओर देखा और कहने लगे कि हाँ करूंगा। मैंने कहा कि किसी पण्डित को बुलाओ जो विधि पूर्वक दान करादे। पण्डित आगया और जब संकल्प का समय आगया तो मैंने कहा कि अपने जन्म-जन्म के पाप दान में मुझे दो। मैंने संकल्प लिया और पीगया। मैंने कहा कि यदि कोई तुम्हारा शुभ कर्म होगा तो तुम बच जाओगे। उन्होंने मेरी बात पर विश्वास किया और थोड़े ही दिनों में वह स्वस्थ हो गया। अब तुम सोचो कि यदि मैंने पाप लिये होते तो मुझे कुछ हो जाता। उसको यह विश्वास हो गया कि बावाजी ने मेरे पाप ले लिये हैं और अब मेरे जिम्मे कोई पाप नहीं है इसलिए वह राजी हो गयो। इसलिए यह विश्वास रखो कि तुम मंजल पर अवश्य पहुँच जाओगे शर्त यह है कि तुम यह समझो कि तुम्हारे अन्तर में जो रूप रंग और शक्लें प्रकट होते हैं यह सब माया हैं तो अंत समय पर जब तुम्हारे अन्तर में फिलम चलेगी और तुम उसको माया समझकर उसमें फँसोगे नहीं तो फिर अपने आप तुम प्रकाश और शब्द में चले जाओगे और इस चक्कर से निकल जाओगे। इसलिए मैं तुम लोगों से कहता हूँ कि यदि अन्त समय पर बावे फकीर का या और किसी गुरु का रूप आ गया तो तुमको दूसरा जन्म लेना पड़ेगा लेकिन यदि उस मूरत को पूर्ण मानोगे तो पार हो जाओगे। मैंने हजूर दातादयाल जी महाराज की बहुत सेवा की और अब भी करता हूँ। पिछली बार भीलबाड़ा गया तो वहाँ मैं कृषक जी को गुरु समझकर ५००/-

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

रुपये देकर आया । दयालदास को गुरु समझकर ४०) रुपया महीन और खाना देता हूँ और मकान दिया हुआ है । कमालपुर वाली मा की सेवा करता हूँ । गुरु की सेवा करना मेरा कर्तव्य है । आप लोग से मुझे ज्ञान मिला इसलिए मैं आप लोगों को अपना गुरू समझता हूँ । मैं अपनी नीयत से आप लोगों को धोखा नहीं देता ।

अपने अपने गुरुओं से जाकर कहो कि बाबा फकीर यह कहता है । अब तुम बताओ कि सचाई क्या है ?

गुरु ने चोला बदलिया सिदक न हारे सिख ।

गुरु नाम है ज्ञान, समझ और विवेक का । अब शान्ति देने का या शान्ति प्राप्त करने का पहला ढंग बदल गया । यदि मैं गलत कहता हूँ तो मेरा खन्डन करो या ये गुरु लोग शपथपूर्वक कहें कि हम जाते हैं । मगर कहे कौन । यदि कोई जांता हो तब ही तो कहेगा । यह तो लोगों को अपने पीछे लगाने और रुपया इकट्ठा करने के लिए कहते हैं कि अन्त समय गुरु ले जाता है । सब धोखा है और फरेब है । पिछला समय गया अब नया युग है । धर्मपंथ बदल रहे हैं और बहुत कुछ बदल चुके हैं । अब शान्ति केवल इस बात में है कि जो गुरु कहता है उसको मानो । तुम लोग यह समझते हो कि गुरु को पैसा देना और कपड़े देना गुरु की सेवा है मगर यह तो संसारिक व्यवहार है । यह गुरु सेवा नहीं यह तुम्हारी अपनी सेवा है क्योंकि जो दोगे वही मिलेगा । मैं गुरु नहीं गुरुओं का गुरू हूँ और सच्चा ज्ञान दिये जाता हूँ । मैं १९४२ में हजूर बाबा सावनसिंह जी महाराज के पास गया । वह बहुत सच्चे आदमी थे । फरमाया कि फकीर ! मुझसे सच नहीं कहा गया । एक तो जीव अधिकारी नहीं दूसरे मेरा डेरा है । तुम निर्भय होके काम करो मैं तुम्हारा संरक्षक रहूँगा । मैंने अपनी आत्मा को सच्चा रखकर सारा जीवन काम किया है । अपने निजी स्वार्थ के लिए मैंने सारा जीवन कोई पाप नहीं किया ।

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

गुरु हुये संसार से परगट, गुरु से ज्ञान लो।
छोड़ दो पाखन्ड को, गुरु मत की महिमा जान लो।

यदि मैं गलत हूँ तो ये वर्तमान गुरु लोग बतायें कि वे लोगों के अन्तर प्रकट होते हैं। कोई नहीं जाता। किस पाखन्ड में लोग आये हुये हैं। यदि स्वप्न में किसी स्त्री, बेटा, भाई या माँ-बाप आयें तो प्रात: उनसे पूछो कि क्या वे आये थे ? कोई नहीं आता। मैंने यह दशा देखी तो मेरे दिल में दर्द पैदा हुआ। आप लोगों को लूट से बचाने के लिए आया हूँ। गुरु नाम है ज्ञान समझ और विवेक का। गुरु भक्ति क्या है सुनो !

'जाके गुरु के पास बैठो, और वचन उनके सुनो।
जो सुनो उसको विचारो, जो विचारो वह सुनो॥
सुनके गुरु के नित करो, बचनों को उनके तुम अहार।
पुष्ट होकर साधना से, करलो सब साक्षातकार॥
गुरु की संगत बिन नहीं, अधिकार होता ज्ञान का।
जब तलक संगत न हो, मिलता नहीं मद मान का॥
मान पद अभिमान मन मत, के सभी समझो विकार।
मानी अभिमानी को कब, झुके कभी सार और असार॥
राधास्वामी योग सीखो, जो सहज है और सुगम।
जीते जी पाजाओ मुक्ति, और बनालो निज जनम॥

राधास्वामी योग क्या है ? सुरत को शब्द से जोड़ना। तुम बेशक जवान से राधास्वामी न कहो लेकिन अपनी सुरत को शब्द से जोड़ दो। लेकिन जब तक मन से छुटकारा नहीं होता सुरत शब्द से जुड़ेगी नहीं। मैं तुमको धोखा नहीं दे रहा, मैं बिलकुल सचाई बता रहा हूँ। डाक्टर जगतजीत सिंह ने इंगलैंड से मुझे पत्र लिखा था कि आप प्रात:काल मेरे पास आये, मुझे सत्संग कराया और फिर आपने कहा कि सिख स्टेट के लिए काम करो। उसने अपनी स्त्री को लिखा कि बैशाखी के लिए बाबा जी को १०१) रुपये दे

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY PURNADAYAL

आना । अब आप सोचो कि क्या मेरे दिल में कभी यह विचार आ सकता है कि वह सिख स्टेट के लिए काम करे ? मैं नहीं गया । जो कुछ किसी के (Sub conscious mind) में होता है वही उसके सामने आता है । मैं जो कुछ कहता हूँ अपने निजी अनुभव के आधार पर कहता हूँ मुझसे झूठ नहीं बोला जाता । चार दिन का जीवन है, झूठे धन और मान को लेकर कहां जाऊंगा ? मैंने एक बार देहरादून में संत कृपाल सिंह जी से कहा था कि हम लोगों को जो गुरुआई मिली है यह हमारे पिछले कर्मों का फल है यदि इस जन्म के कर्मों को देखा जाये तो सीधे ही नर्क में जाना होगा ।

आप लोग आये हो। आओ या मत आओ तुम्हारी इच्छा है । लेकिन मैं सचाई वर्णन करने के लिए विवश हूँ । मेरे जिम्मे कर्तव्य है मैं कोई परदा नहीं रखता। तुम लोग निक्ल अवल और अज्ञानी हो । जहाँ तुम्हारा विश्वास है उसको पूर्ण मानो। तुम्हारा काम बन जायेगा। तुम लोग दूर दूर से आये हो । रास्ते में आते समय एक महिला बीमार हो गई । मैं अपने आप से पूछता हूँ कि यह महिला तो विश्वास से तेरे पास आई है वह बीमार क्यों हो गई ? क्या तू उसको स्वस्थ कर सकता है ? मैं हूँ गुरू, सचाई वर्णन करता हूँ और मैं पाखन्ड जगाना नहीं चाहता। हनुमान जयन्ती के दिन श्री हरी बाबा के पास बलदेवराज मास्टर मोहनलाल जी का लड़का गया और उनसे कहा कि महाराज ! कोई उपाय बताइये । उन्होंने कहा कि तुम हनुमान जी का ध्यान किया करो। वह रात को हनुमानजी का ध्यान करने बैठ गया और फिर सो गया । दो बजे के लगभग स्वप्न में हनुमान जी प्रकट हुये । बात चीत हुई। हनुमान जी ने कहा कि चल तुमको राम के दर्शन करा दूँ । बलदेवराज को साथ लेकर हनुमान जी मानवता मन्दिर में आये । आगे मैं (बाबा फकीर) बैठा था। हनुमान जी ने कहा यही है राम, यही है राम, यही है राम। हनुमान जी के साथ बलदेवराज भी गाने लग गया। समीप में मास्टर

मोहनलाल जी सोये हुये थे। बलदेवराज की आवाज सुनकर वह जागे और बलदेवराज को जगाकर पूछा कि क्या बात है तो उसने अपने स्वप्न की सारी कहानी सुनाई। कुछ समय के बाद श्री हरी बाबा जी यहाँ आये और मैंने उनसे यह कहानी बताई और कहा कि अब आप बताओ कि क्या आप मुझे राम मानोगे और मेरी पूजा करोगे ? अरे दीवानो ! यह रूप सब मन की कल्पना है और माया है और इस माया से निकालने के लिए मैं आया हूँ। मगर तुम लोग तो मुझे भी माया में फँसाते हो लेकिन मैं तुम लोगों के वश में नहीं आता—

जग में परगट परमदयाल, वाणी मेरी को जो समझे होगा निहाल।

मुझे पूजने से कुछ नहीं बनेगा। यदि रुपया देने से कोई तर जाता तो संसार के सभी धनी लोग तर जाते। यह रुपया देना तो एक सामाजिक व्यवहार है इससे मुक्ति नहीं मिल सकती। मुझे अन्तर में रखने से मुक्ति नहीं मिलेगी। मुक्ति मिलेगी गुरु ज्ञान को अपने अन्तर रखने और उसपर अमल करने से। हजूर दातादयाल जी महाराज गुरुआई कर गये। उनमें पाखन्ड नहीं था लेकिन वह मेरी तरह लोगों को झाड़ नहीं डालते थे। मैं तुम लोगों को लूट से बचाना चाहता हूँ। अपनी गाढ़ी कमाई से सबसे पहले अपने बाल-बच्चों को पालो। यदि बचता है तो फिर कुछ गुरु को दो वरना नहीं।

गुरु रूप न समझे कोय, भरम में पड़े अज्ञानी।
गुरु को मानुष जानकर, भक्ति का करे व्यौहार।
सो प्रानी अति मूढ़ हैं, कैसे जायें भवपार।
देह के बनें अभिमानी ।। भरम में—

गुरु को मानुष जानकर, शीत प्रसादी लो।
सो तो पशु समान हैं, संशय में अटके।
गुरु तत्व न जानी ।। भरम में—

गुरु को मानुष जानकर, मानुष करें विचार।
सो नर मूढ़ गँवार हैं, भूल रहे संसार।
मोह के फाँस फँसानी ॥ भरम में—
गुरु को मानुष जानकर, भेड़ की चलते चाल।
वह बन्धन को क्यों तजें, व्यापे माया जाल।
पड़े योनि की खानी ॥ भरम में—
गुरु नाम आदर्श का, गुरु है मन का इष्ट।
इष्ट आदर्श को न लखे, समझो उसे कनिष्ट।
बात बूझे मनमानी ॥ भरम में—
गुरु भाव घट में रहे, अघट सुघट की खान।
जिसे समझ ऐसी नहीं, वह है मूढ़ समान।
नहीं गुरु रूप पिछानी ॥ भरम में—
चेला तो चित में रहे, गुरु चित के आकाश।
अपने में दोनों लखें, वही गुरू का दास।
रहे गुरु पद घट ठानी ॥ भरम में—

जो आदमी यह समझता है कि मेरा गुरु व्यास में रहता है, आगरा में रहता है या होशियारपुर में रहता है वह गुरु का दास नहीं है। मुझे यह समझ नहीं आती थी। आप लोगों की दया से मुझे यह समझ आई। सच्चे दिल से चाहता हूं कि आप सुखी रहो, रहो, आपका स्वास्थ्य ठीक रहे, खाने को भोजन मिले, रहने को मकान और मन को शान्ति मिले। तुम लोगों से मुझे यह भेद मिला इसलिए आप मेरे सच्चे सत्गुरू हैं। हजूर दातादयाल जी महाराज ने फरमाया था कि फकीर! तुमको सच्चे सत्गुरु के दर्शन सतसंगियों के रूप में होंगे तो सच्चा सत्गुरु क्या निकला? ज्ञान।

सुख शिष्य गुरु शब्द है, शब्द गुरू का रूप।
शब्द गुरु की परख बिन्, डूबे भरम के कूप।
नर जनम गँवानी ॥ भरम में—

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

गुरु ज्ञान का तत्व है, गुरु ज्ञान का सार।
गुरु मत गुरु गम जो लखे, फिर नहीं भव मय भार।
कमल जैसी गति आनी ॥ भरम में—
राधास्वामी सतगुरु सन्त ने, कही बात समझाय।
जो नहीं माने बचन को, उरझ उरभ उरझाय।
कौन समझे यह बानी ॥ भरम में—

मैंने यहाँ आंखों का अस्पताल खोला है। अब यदि हम और कोई बिल्डिंग न भी बनायें तो भी सवा लाख रुपया सालाना खर्च का अंदाज है। मेरी जो किताबें छपती हैं उनका हम कोई मूल्य नहीं लेते। क्यों ? मैं ब्राह्मण हूँ। जो कुछ मैं लिखता हूँ वह मेरा अपना ज्ञान है। किताबी नहीं। ब्राह्मण को वेद बेचने की आज्ञा नहीं है। वेद का अर्थ है ज्ञान। जब रामचन्द्र जी को बनवास हुआ तो लोगों को शक हुआ कि इस काम में भरत जी का हाथ है। भरत जी ने कहा कि यदि इसमें मेरा हाथ हो तो मुझे वह पाप लगे जो ब्राह्मण को वेद बेचने में लगता है। इस साल हमारा खर्च जो हमने Free Publication पर किया है साढ़े सत्ताईस हजार रुपये है। मेरी सचाई के कारण मुझे कौन पैसा देता है। यदि परदा रखता तो तुम लोगों को लूट के खा जाता। इसलिए अब हैल्थ डिपार्टमेंट को लिखा है कि कुछ ग्रान्ट मिल जाये। यदि अस्पताल चल सका तो चलाऊँगा। वरना बन्द कर दूँगा। लोग वहां पैसा देते हैं जहां उनको सब्ज बाग दिखाये जाते हैं।

ऐ दाता ! आपने आज्ञा दी थी कि शिक्षा को बदल जाना। पता नहीं मैंने ठीक किया या गलत किया। जो मेरी समझ में आया वह कहा और आपकी आज्ञा का पालन किया। यदि मैंने कोई गलती की हो तो क्षमा चाहता हूँ। ऐ संसार वालो ! मुझे क्षमा करना। मेरी नीयत साफ है।

सबको राधास्वामी।

नाम की महिमा की कथा

लेखक—दाता दयाल महर्षि शिवब्रतलाल जी महाराज

कासमक्ष कहते हैं। नाम में कुछ नहीं धरा है। मीठा कहने से मुंह मीठा नहीं होता है। यदि इनकी बात ठीक है तो उसके पिता का नाम लेकर गाली या कुछ कठोर शब्द तो कह दीजिये। फिर देखिये कि उनके मिजाज का पारा किस डिग्री पर बढ़ जाता है। ऐसा क्यों? नाम तो कोई चीज नहीं है। फिर तुमको गुस्सा क्यों आगया। जो लोग नाम और रूप के जगत में रहते है। नाम और रूप के जगत में जिनका व्यवहार है वह कैसे कहते हैं कि नाम लेने से कोई लाभ नहीं होता। नाम में बड़ी शक्ति है।

शब्द ही मारे मर गये शब्द ही तजिया राज।
जो यह शब्द विवेकिया ताका सरिया काज॥

क्या खटाई के नाम लेने से सचमुच मुंह में पानी नहीं भर आता? क्या मिठाई कहने से वाकई लड्डू पेड़ों का चित्र मन की आँखों के सामने नहीं आजाता? तुम नाहक ऐसी बेतुकी बातें करते रहते हो। अभी मैं तुमको एक दर्द भरी रोमाँचकारी कहानी सुनादूं। तुम रोने लगोगे। अभी एक वीर रस का इतिहास कानों में पड़ने लगे तुम्हारे रोंगटे खड़े हो जायेंगे। क्या रोने की आवाज सुनकर तुम्हारा हृदय नहीं पसीजता! क्या रोने की आवाज सुनकर तुम्हारा हृदय नहीं पसीजता! क्या प्रेम और प्यार की बातों का तुम्हारे चित पर प्रभाव नहीं पड़ता हम तो कहते हैं हर व्यक्ति पर कुछ न कुछ असर होता है। यह सब नाम के नजारे हैं, दृश्य हैं। यदि यह नाम का प्रभाव नहीं तो और क्या है? और फिर भी तुम नासमझी से कहते हो नाम में धरा क्या है। नाम में सब कुछ है। नाम में पूरा इतिहास है। नाम में जादू का असर हैं। नाम ही मंत्र यंत्र और तंत्र है अगर तुम्हारा नाम लेकर पुकारूं तो क्या तुम न बोलोगे? तुम्हारी शक्ति क्या हैं जोन

बोलो। क्योंकि जो नाम के जगत में रहता है नाम ही उसकी जान है। कैसे वह इसके प्रभाव में न आवेगा।

यह एक साधारण सी बात है। इसी प्रकार जो लोग मालिक के नाम का जप करते हैं मालिक उनकी सुनता है। और वे दिनों दिन मालिक के नाम में रत होते हुए चले जाते हैं। तुम मेरी बात पर कुछ न कुछ विश्वास भी किया करो। तुम को मालूम होना चाहिये कि हर प्रकार की वाणी में एक तरह की समझाने बुझाने की शक्ति हुआ करती है। शब्द वास्तव में ख्याल की मूर्ति हैं। एक एक शब्द में एक एक ख्याल मौजूद रहता है। तुमने कहा घोड़ा। मैंने समझ लिया एक ऐसे पशु का ख्याल दिलाते हो जिसका रूप रंग ऐसा है। इस पर जीन कसा जाता है और लोग इसकी पीठ पर सवारी करते हैं। एक ख्याल था जो तुम्हारे मन में टकराया। शब्द के रूप में तुम्हारी जिभ्या से निकला। और मेरे कानों के परदे से टक्कर खाता हुआ चित्त में बैठ गया। और मैंने सहज में ही समझ लिया कि तुम्हारा अर्थ घोड़ा शब्द से क्या है। इन चोंतीस या बावन अक्षरों के खेल से रूप शब्द बने हैं। और यह शब्द निरे ख्याल ही हैं और कुछ नही। जब मैं गाय कहता हूँ तुम गाय समझते हो। जब मैं भैंस कहता हूँ तुम भैंस समझो। क्योंकि मेरे मन के भाव की छाया शब्द के रूप में तुम्हारे मन पर पड़ती है और तुम उसको वह ही समझते हो जो मैं समझाना चाहता हूँ। यह क्या बात है? कौनसी शक्ति है जो इस प्रकार तुमको समझाती है? इसको संस्कृत में शब्द की शक्ति कहते हैं। यह शब्द और कुछ नहीं। यह केवल 'नाम' है। और जो तुम पढ़ते लिखते, सुनते, सोचते, कहते और कहलवाते रहते हो सब 'नाम' है। नाम से अलग नहीं हैं। और ये नाम किस प्रकार अपना तमाशा दिखाते हैं। कभी यह बड़ी पुस्तकों के आकार में अपना रूप दिखाते हैं, कभी मन्द्र, वृक्ष और पर्वत बन जाते हैं। जो रूप है वह ही नाम है। जो नाम है वह ही रूप है। इन दोनों में कुछ भेद नहीं। केवल प्रगट करने की शैली का अन्तर है, इस नाम और रूप के जगत में रह कर नाम की महिमा उपमा से इन्कार करना भारी भूल है। बुद्धिमान पुरुष कभी

इस महिमा की अवहेलना नहीं कर सकते ।

यह नाम बुरे को भला, भले को बुरा बना देता है । क्यों ? कारण य हैं कि अपने सिलसिले में वह बुरे या भले ख्याल का रूप मन में कायम क देता है । तुमने कहा महल और महल की सूरत मन में कायम होगई । ख्याली तौर पर तुमने महल का नक्शा ख्याली था मन की आंखों से देख लिया । इसी प्रकार जो व्यक्ति बुरे नाम लिया करेगा बुरे भाव मन में बसाता रहेगा और बुरा बन जायगा । क्योंकि अव्वल तो उसका स्वभाव पड़ जायगा । और स्वभाव हो जाने से वह नाम और ख्याल उसके जीवन के अंग बन जायेंगे । दूसरे परस्पर सहयोग, और हमदर्दी के नियम के अनुसार यह नाम और ख्याल अपने अपने हम जिनसों अथवा परिवार को खेंच-खेंच कर उसके चित्त में बसाते जायेंगे । और यह कुछ का कुछ हो जायगा । इसी प्रकार जो शुभ कामों और अच्छे ख्यालों से सम्बन्ध रखते हैं, शनः शनः नेक होते जाते हैं ।

बिलकुल इसी नियम के आधीन लोगों को मालिक के नाम को याद करने का उपदेश दिया जाता है । जिसके फलस्वरूप सहज सहज में मनुष्य नेक बन कर सार तत्व तक रसाई पैदा करले । उदाहरण के रूप में गुरु-मुख द्वारा तुमको बताया गया कि मालिक दयासागर है । उसका नाम दयालु है । 'दयालु' नाम का आदर्श गुरु की जुबान से निकलते ही तुम्हारे मन में स्थिर होगया । इष्ट का ध्यान मन में आगया, अब जितना तुम नाम का अभ्यास करते जाओगे उसी कदर वह नाम अपने गुणों को तुम में उत्पन्न करता जायगा । तुममें खुद दया का रंग चढ़ता जायगा । तुम अहिंसक बनोगे, तुम सत्य बोलोगे, किसी की खैरात न लोगे न चोरी करोगे और ईश्वर परायण होकर जीवन के प्रयोजन को जो गुरु के बताये हुए नाम में मौजूद है पूरा कर लोगे । तुम्हारा जीवन सुफल हो जायगा ।

मालिक का नाम फलदायक उसी समय होता है जब वह गुरुमुख द्वारा प्राप्त होता है । तुम कहोगे हम पुस्तकों के बताये हुए अथवा जो और लोग लेते हैं उसे सुनकर अपना काम बना लोगे बहुत अच्छा ! तुमको इख्तियार है ।

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

पर इससे वह लाभ न मिलेगा।

गुरु बिन माला फेरते गुरु बिन लेते नाम।
गुरु बिन नाम हराम है जाय पूछो वेद पुरान ॥

आखिर गुरु से नाम क्यों सीखा जाय? इसका उत्तर यह है। गुरु ने नाम का साक्षात्कार कर लिया है। ख्याली तौर पर उसके सब गुण उसके चित्त में मौजूद हैं और वह जब उसके हृदय से निकल कर चेले के हृदय में जायेंगे विशेष प्रकार का प्रभाव पैदा करेंगे। मिसाल के तौर समझो। एक छोटा लड़का है, उसको डराने को तुमने कहा 'हऊआ आगया' लड़का न तो जानता है कि 'हऊआ' क्या है न उसने कभी हऊआ' की तसवीर देखी है। पर चूंकि तुम्हारे मन में उसके डराने की नीयत है और भय के संस्कार तुम्हारे हृदय में मौजूद हैं वह परस्पर तुम्हारे मुख से सुनने से बालक के मन में भर जायेंगे और उसको डरायेंगे। इसी प्रकार गुरू में प्रेम है। गुरु में दया भाव हैं, गुरु के चित्त में ईश्वर का आदर्श अच्छी तरह कायम है। जब वह चेले के उद्धार की नीयत से उसको मालिक का नाम बतायेगा वह अपना असर किये बिना न रह सकेगा। इस वास्ते गुरु की महिमा का गीत गाया जाता है। उसका महत्व है।

कभी-कभी तो केवल गुरुमुख द्वारा नाम के सुन लेने ही से मनुष्य के दबे हुए संस्कार उभर खड़े होते हैं और कभी महनत भी करनी पड़ती है। पर हर हालत में असर जरूर होता हैं। गुरु पूरा होने की शर्त है, केवल नाम के बता देने से चेले का उद्धार कर देता हैं। इसमें जरा भी शक व शुभा की जरूरत नहीं है।

अजामिल कन्नौज का रहने वाला ब्राह्मण था। बुरी संगति के कारण एक चाण्डाल के वश में आगया। रात दिन बदी और बुराई से काम किया करता था। कौन से अवगुण थे जो इस पापीं ब्राह्मण ने नहीं किये थे। जूआ वह खेलता था। शराब वह पीता था, चोरी वह करता था। और जब कभी अवकाश पा जाता, दो चार आदमियों के साथ मिल कर लोगो को लूट लिया करता था। कुछ थोड़ा बहुत लिखा पढ़ा भी था। पर इस पढ़ने ने

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

उसके साथ वह काम किया जो दूध पिलाने से विषैले सांप के साथ होता है। मालिक से इसको भारी चिढ़ थी। धर्म कर्म से कोसों भागता था। और जिस व्यक्ति को कथा, वार्ता और सत्संग का प्रेमी पाता उसकी हंसी दिल्लगी करता।

एक दिन वह कहीं बाहर गया हुआ था। संध्या समय कुछ साधू उस मोहल्ले से गुजरे जहाँ अजामिल रहता था। आकाश पर बादल छाये हुए थे। साधुओं ने लोगों से पूछा कि रात के ठहरने के लिये कोई स्थान मिल जाय। कुछ युवक जो अजामिल के मिलने जुलने वालों में से थे हंसी दिल्लगी में साधुओं को अजामिल का घर बता दिया। महाराज इस मोहल्ले में एक ब्राह्मण रहता है। यदि आप उसके घर जाँय तो शायद रहने को जगह मिल जाय। साधू भोले भाले क्या जानते थे कि वह लुटेरे के घर भेजे जा रहे हैं। पर मालिक की दया से बुराई करने का भी परिणाम भलाई में बदल जाता है। साधू उसके मकान पर गये। मालूम हुआ अजामिल कहीं बाहर गया है। बैठक खाली थी। साधुओं ने भक्त का स्थान समझ कर निश्चिन्त अपने आसन जमा दिये। नन्हीं २ बूंदें गिर रही थी। खाने पीने का कोई इन्तजाम नहीं पर यह मंडली मस्त थी। कुछ इसकी चिन्ता नहीं थी कि कोई खाना पीना ही दे। दीपक जला भगवत नाम की आराधना करने लगे। और कथा कीर्तन में ऐसे लवलीन होगये कि तन बदन का होश न रहा। या तो डर के मारे कोई आदमी अजामिल के घर आता नही था या जिस समय गाना बजाना शुरू हुआ सारे मोहल्ले के मनुष्य वहाँ टूट पड़े। और साधुओं के कीर्तन में अमृत पान करने लगे। एक ओर साधु खुद भगवान के स्मरण भजन में लौलीन थे दूसरी ओर मोहल्ले वाले भी अपना घर-भूल बैठे। बेसुधी और चित्त की स्थिरता का ऐसा चित्र खिंच गया कि जो कोई वहां आया वह ही उसके प्रभाव से बेसुध होता गया। यह लीला घण्टों रही।

आधी रात के समय अजामिल अपनी स्त्री को साथ लिये हुए आया। दूर से गाने बजाने की आवाज सुनी। मन में क्रोधित हुआ।

पूछा यहां कौन लोग आये हैं। किसी ने उत्तर दिया आज तेरे घर को साधुओं ने पवित्र कर दिया। इन शब्दों में ईश्वर जाने क्या जादू है। चित्त बड़ा व्याकुल हो गया।

अनहोनी प्रभु कर सकें होनी देय मिटाय।
तुलसी ऐसे राम ते काहू की न बसाय॥

क्रोधाग्नि प्रेम प्रभाव से पिघलकर ठंडी पड़ गई। ईश्वर की महिमा? चांडाल के घर आकर ऐसा कीर्तन हो! क्या मामला है? इस तरह ख्याल करता हुआ वह आगे बढ़ा। गाने की आवाज सुनाई दी।

टेक—भजो सदा हरि नाम सन्तों भजो सदा हरि नाम।
जाकी पूँजी साँस है क्षण आवे क्षण जाय।
ताको ऐसा चाहिये रहे नाम लौ लाय॥ सन्तो
नींद निशानी मौत की उट्ठ कबीरा जाग।
और रसायन छोड़कर तू नाम रसायन लाग॥ सन्तों
नाम जो रत्ती एक है पाप जो रत्ती हजार।
आधि रत्ति घट संचरे जार करे सब छार॥ सन्तों
सत्त नाम के सुमरिते उधरे पतित अनेक।
कह कबीर नहीं छांड़िये सत्त नाम की टेक॥ सन्तों
नाम जपत कोढ़ी भला चुइ चुइ पड़ै जो चाम।
कंचन देह किस काम की जा मुख नाहें नाम॥ सन्तों
जाकी गाँठी नाम है ताके हैं ऋद्धि।
कर जोड़े ठाड़ी रहें सकल सिद्धि नौ निद्धि॥ सन्तों

ख्याल ने मजबूती के साथ अपना मंडल बना लिया। ऐसा चमत्कार हो गया कि सब अपनी सुध भूल गये। अजामिल के चित्त पर भजन की एक एक कड़ी ने वह प्रभाव डाला जो हथोड़ा लकड़ी साथ करता है। भीतर ही भीतर चित्त चूर चूर हो गया। अपने

अवगुणों की ओर ध्यान गया। हाय ! हाय ! मेरी आयु यों ही नष्ट भ्रष्ट हुई ! न किया मैंने वह कर्म जो आज काम आता। ब्राह्मण कुल में पैदा हुआ और काम किये चांडाल जैसे ! रे धूर्त ! अब क्यों पछिताता है ! हे प्रभो इस करनी का भी कोई ठिकाना है ! कैसे मेरी मुक्ति होगी ! वह मन में सोचता भी जाता था और भजन भी सुनता जाता था। मन में अन्दर ही अन्दर कुरेद थी। स्त्री को साथ लिये हुए वह अपनी चौपाल पर आया। जिसकी इस पर निगाह गई सब डर गये क्योंकि अजामिल बड़ा ही ऊधमी और निर्दई खूनी आदमी था। पर उसकी दशा कुछ और थी। वह आया और जहाँ भजन हो रहे थे मंडली के महंत के आगे धड़ाम से गिर पड़ा। त्राह मान ! त्राह मान !! त्राह मान !!! 'भजन बंद सब चुप' महंत ने पूछा क्या है ? उसने कहा भगवन ! यह पापी अजामिल है जिसके घर को आपने पवित्र किया है। वह इस योग्य कब था। वह संसार में ठग डाकू और अत्याचारी मशहूर है। इस नाम से सब थर-थर काँपते हैं। आपने आज कैसे दया की। साधू समझदार और ऐसे मनुष्यों के सुभाव से परिचित था। कहने लगा, कुछ चिन्ता नहीं। मालिक का नाम पापी से पापी को तार देता है। तू शोक न कर। मालिक ने समझ बूझकर तेरे यहां भेजा है। साधु वहां कभी नहीं जाते जहाँ इनका अनादर होता है। तू जीवित वीर पुरुष है और साधू तेरे जैसों के उद्धार के ही लिये हैं।

साधु सिंह का एक मत जीवित ही को खांय।
भाव हीन मृतक दशा ताके निकट न जाँय॥

इन शब्दों ने अजामिल के दिल पर और चोट की। वह जोर से साधू का पांव पकड़कर रोने लगा। इसकी स्त्री भी रोती रही। उसने पूछा क्या मेरा भी उद्धार हो सकता है ? हां, यह बोला सिर पर हजारों मन के पाप का बोझ है। उसने कहा जिस प्रकार अग्नि

की एक चिनगारी सूखी घास के ढेर को दम के दम में जलाकर भस्म कर देती है, वैसे ही भगवान का नाम पाप को भस्म कर देता है। उसने पूछा मेरा मन मलीन है वह नाम कब जपने लगा। साधू ने कहा, मलीनता जाती रही, तेरा भाग उदय हुआ है। शुभ कर्म जो तूने किसी जन्म में किये होंगे आज उदय होने पर आ गये। तुमको मालिक का नाम प्राप्त होगा। और तुमको सदगति मिलेगी। हे अजामिल! जिस 'नाम' ने बालमीकि को लुटेरे से ऋषि बना दिया वह ही नाम तुमको मालिक का सच्चा भक्त बना देगा। इसने कहा मेरा हृदय कठोर है। साधू बोला, नाम का हथोड़ा इसको कूट-कूटकर मोम बना देगा। और इसके अन्दर मालिक की मूर्ति के अक्स खिंच जायेंगे। शोक न कर, 'नाम' में बड़ी शक्ति है।

देखने वाले चकित! यह क्या बात है, क्या करामात है, क्या हो रहा है। अजामिल और यह दशा! लोगों को धोखा हुआ। गौर से सूरत देखी, आवाज सुनी, अरे यह तो सचमुच अजामिल ही है! मालिक की लीला अपरम्पार है! जो चाहे पल में कर दिखाये। "पर्वत को राई करे, राई पर्वत मान।"

बातचीत करते हुए आधी रात बीत गई। इसकी स्त्री को होश आया कहने लगी साधुओं ने भोग भी लगाया है या नहीं! लोगों को अब जाकर ध्यान आया। कहने लगे किसी को यह चेत नहीं हुआ था। साधू बोले क्या हर्ज है। आज भगवान की मौज ऐसी ही थी। रात इसी तरह भजन भाव में कट जायगी। प्रातः ही साधू किसी ओर को चले जायेंगे। साधुओं को खाने पीने का इतना ख्याल भी नहीं रहता। अजामिल पर दूसरा कोड़ा लगा। दिल तड़प गया। हाय! घर पर साधू आवें और यों ही भूखे रह जाँय! रे अपराधी अजामिल! तेरे घर के सिवाय और ऐसी बातें कहाँ सुनने को मिलेगी।

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

साधु आवत देखकर मन में हृदय मरोर।
सो तो होगा चूहड़ा बसे गांव की ओर॥
खाली साध न भेंटिये सुन लीजे सब कोय।
कहें क़बीरा भेट धर जो तेरे घर होय॥

दोनों स्त्री पुरुषों ने घर का द्वार खोला। स्त्री ने कहा जाओ बाजार से पेड़े और दही ले आओ। इस समय खाना बनाने में साधुओं को कष्ट होगा। और वह नंगे सिर और नंगे पैरों गया दुकानें बंद थीं। बड़ी खातिर खुशामद से दुकान खुलवाई। दुकानदार हैरान! आज अजामिल कैसे ऐसी नम्रता और प्रेम में बातें करता है! वह मिठाई और दही बाजार से लाया। साधुओं के पास रखा। भगवान इसको भोग लगाइये और अजामिल को अपनी शरणागत समझिये। कुसमय खाना मंजूर नहीं था एक साधू ने मने किया। अजामिल ने हाथ जोड़कर विनय की। यदि इसका भोग नहीं लगा तो आज ही रात को अजामिल की मौत का दृश्य दुनिया देखेगी! जिस तरह आपने मेरी आंखे खोली हैं इसी दृष्टि से इस भोग को भी लगाइये। और मुझको अपने चरणों में लीजिये। महंत ने उसकी बात मान ली। भोग लगाया गया सब ने खुश होकर खाया। भजन सुनने वाले घर नहीं गये थे। उनको साधुओं के सतसंग में ऐसा रस आया था कि उनका जी जाने को नहीं चाहता था! महंत ने सब आदमियों को परशाद बांटा। और सबसे कहा कि तुम सब लोग अजामिल के उद्धार की मालिक से प्रार्थना करो।

सारी रैन भजन भाव में बीती। प्रातः ही साधू चलने को तैयार हुए। अजामिल ने रो रोकर कहा मेरा भी उद्धार करते जाइये। और महंत ने उसको कहा तू सदा 'नारायण' 'नारायण' का मंत्र जपा कर इससे तेरा उद्धार होगा और जब तेरे घर में पुत्र पैदा होगा उसका नाम भी 'नारायण' रखना।

अजामिल की लालसा थी कि साधु एक दो दिन और ठहरें पर वह न ठहरे, अजामिल को मामूली नाम का उपदेश देकर चले गये।

नाम के प्रताप से, महातम से, इसका जीवन पलट गया। उलट गया। उल्टे नाम की गति प्राप्त हुई। रोज रोज इसके जीवन में परिवर्तन होने लगा। अब न लूटपाट से काम न मारधाड़ से मतलब। लुटेरा कुछ का कुछ बन गया। हर समय उसकी जिभ्या पर मालिक का नाम रहता था। जो लोग डरते थे अब उसके साथ प्रेम और प्यार का व्यवहार करने लगे वह भक्ति का पात्र बन गया। सारे अबगुण एक २ करके निकल गये। कबीर साहब ने सत्य कहा है —

जहां बाज बासा करे पंछी रहे न कोय,
जिस घट प्रेम प्रगट भया पाप रहे न कोय।
मन पंछी जब लग उड़े विषे वासना मांह,
प्रेम बाज की झपट में जब लग आया नांह।

जीवन सुधर गया। अजामिल कुछ का कुछ हो गया। इसके घर लड़का पैदा हुआ उसका उसने नाम 'नरायण' रक्खा और प्रेम से उसको पालने लगा।

जिस समय उसकी आयु अधिक हुई वह बीमार पड़ गया। पर मन में शांति थी। बेचैनी जो मरते समय लोगों में नजर आती है उसमें नहीं थी। आखिर में अन्त समय आ पहुंचा। आँखें बन्द थीं। जिभ्या से हर समय 'नारायण' 'नारायण' का नाम निकलता था। जिनको साधुओं से इसके दीक्षित होने का हाल मालूम था वे जानते थे मालिक के नाम का सुमिरन कर रहा है। अन्य संसारी लोगों को ख्याल था कि इसको अपने पुत्र से अधिक मोह है इसलिये उसका नाम ले रहा है। अन्त समय तक बराबर वह मालिक के नाम का स्मरण करता रहा और जब प्राण अंत समय में निकलने लगे उस समय उसने 'नारायण' कहा और आंख ऐसी मूंदी कि फिर न खोली और इस प्रकार संसार ने बिगड़े हुए जीवन के सुधार का दृश्य नाम के स्मरण के सिलसिले में देखा। धन्य हैं वे पुरुष! जिनको मालिक के नाम से प्रेम है! क्योंकि इन्हीं को उसके सच्चे पुत्र कहे जाने का श्रेय है।

परमदयाल फकीरचन्द जी कृत हिन्दी पुस्तकें

याल फकीर की जीवनी	२)५०
ानव धर्म प्रकाश भाग १	)७५
ानव धर्म प्रकाश भाग २	
(श्री दुर्गादास कृत)	१)
आवागवन उर्फ जीवन रहस्य	१)
ार का सार भाग १ व २	५)
ड़ पुराण रहस्य	२)२५
त सतगुरु वक्त	१)५०
म वाणी भाग १, २, ३	३)
प	)५०
हमामा की व्याख्या	२)५०
ुरत शब्द योग	१)
िर्वाण से परे	१)
्ी या अपार के परे	१)२५
ईश्वर दर्शन	१)२५
ारी धार्मिक खोज	१)२५
ुरु महिमा	१)
ुरु बन्दना	)७५
जायब पुरुष	१)
सार तत्व सचाई और शान्ति	१)
आदि अन्त	१)२५
ांच नाम की व्याख्या	१)५०
सत ज्ञान दाता भाग १ व २	२)
नाम दान	१)
उस घर की खोज	१)
अगम बिकास	१)
निर्वाण	१)
सतउपदेश	)७५
ईश्वर प्राप्ति	)३०
अनुभव ज्ञान प्रकाश	१)
ज्ञान योग	१)

अन्य धार्मिक पुस्तकें

सत सनातन धर्म या सत मानव धर्म	२)
जगत कल्याण	)७५
विश्व धर्म भाग १ व २ व ३	१)७५
फकीर बचनामृत	)५०
कर्म भोग या मौज भाग १व२	१)७५
राधास्वामी शताब्दी पर मेरी भेंट भाग १ व २	३)
जगत निस्तार	१)२५
जगत उभार	१)
मानव कल्याण भाग १, २, ३, ४, ५	६)
अद्भुत मोती	१)
५० वर्षीय फकीर अनुभव	)७५
मेरा ८३ वर्षीय अनुभव	१)२५
मानवता युग धर्म	)८०
आकाशी रचना	)५०
आजादी की कुंजी	)७५
शिव फकीर पत्रावली	१)५०
हृदय उद्गार	१)
कबीर सार शब्द व्याख्या	१)
रचना का भेद	)७५
नव बिवाहितों को उपदेश	)२५
उन्नति मार्ग	)५०
गूढ़ रहस्य व्याख्या	२)५०
फकीर प्रवचन	)७५
सार भेद	)२५

Regd. No. L-ALG-28

पुस्तकें

हमारे यहाँ,

महर्षि शिवब्रतलाल जी महाराज

कृत

हिन्दी की आध्यात्मिक, धार्मिक,
स्त्री उपयोगी,
स्वास्थ्य व मनोविज्ञान सम्बन्धी
पुस्तकें तथा 'शाही' और 'मोती'
सिलसिले के उपन्यास तथा
परमदयाल फकीरचन्द जी महाराज
कृत उच्च कोटि की अमूल्य पुस्तकें
मिलती हैं।

पूरा सूचीपत्र मंगायें।
डाक खर्च सब का अलग है।
पुस्तकें रजिस्टर्ड डाक या रेल से
भेजी जाती हैं।

मिलने का पता :—

शिव साहित्य प्रकाशन मंडल

या

सम्पादक मनुष्य बनो

शिव भवन, लेखराजनगर,
अलीगढ़ (उ० प्र०)

ग्राहक सं०

सम्पादक— प्रभुदयाल मीतल
व्यवस्थापक व प्रकाशक—
श्रीमती मुद्रा मीतल,
शिव भवन, लेखराज...
अलीगढ़

Printed by S. Mittal, Data Dayal Printers, Aligarh